

^ राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी _^_
राजा भरथरी से अरज करे, महलो में कड़ी महारानी ।
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ॥
नगर उज्जैन के राजा भरथरी हो घोड़े असवार ।
एक दिन राजा दूर जंगल में खेलन गया शिकार ।
विछड गए सारे संग के साथी राजा भये लाचार ।
किस्मत ने जब करवट बदली छुटा दिए घरबार ।
अब होनहार टाली न टले समझे कोनी दुनिया दीवानी ।
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ॥
काला सा एक मिरग देखकर तीर ताण कर मारा ।
तीर कलेजा चीर गया मृग धरणी पे पड़ा बेचारा ।
व्याकुल होकर हिरणी बोली ओ पापी हत्यारा ।
मिरगे के संग में सती होवांगी हिरणी का डार विचारा ।
अब रो रो के फ़रियाद करे राजा भये अज्ञानी ।
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ॥
राजा जंगल में रुदन करे गुरु गोरखनाथ पधारे ।
मिरगे को प्राण दान दे तपसी राजा का जनम सुधारे ।
उसी समय में राजा भरथरी तन के वस्त्र उतारे ।
ले गुरुमंत्र बन गया जोगी अंग वभूति रमाये ।
अब घर घर अलख जगाता फिरे बोले मधुर वाणी ।
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ॥

गुरु गोरख की आग्या भरथरी महलों में अलख जगाता ।
भर मोतियन को थाल ल्याई दासी ले जोगी सुखदाता ।
ना चाहिए तेरा माणक मोती चुठी चून की चाहता ।
भिक्षा ल्युँगा जद इयोढी पर आवेगी पिंघला माता ।
अब राणी के नैना से नीर ढरे पियाजी की सुरत पिछाणी ।
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ।
भाग दोड़ के पति चरणों में लिपट गई महाराणी ।
बेदर्दी तोहे दया नहीं आई सुनले मेरी कहानी ।
बाली उमर नादान नाथ मेरी कैसे कटे जिंदगानी ।
पिवजी छोडो जोग राज करो बोले प्रेम दीवानी ।
थारे अन्न का भण्डार भरया थे रोज करो मनमानी ।
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ॥
धुप छाव की काया माया दुनिया बहता पाणी ।
अमर नाम मालिक को रहसी सोच समझ अज्ञानी ।
भजन करो भव सिन्धु तिरो यू कहता लिखमो ग्यानी ।
नई नई रंगत गावे माधोसिंह आवागमन की ज्यानी ।
अब राम का भजन करो सब प्यारे तेरी दो दिन की जिंदगानी ।
राज पाठ तज बन गया जोगी या के मन में ठानी ॥
जय श्री नाथजी की.....